# Participative Learning

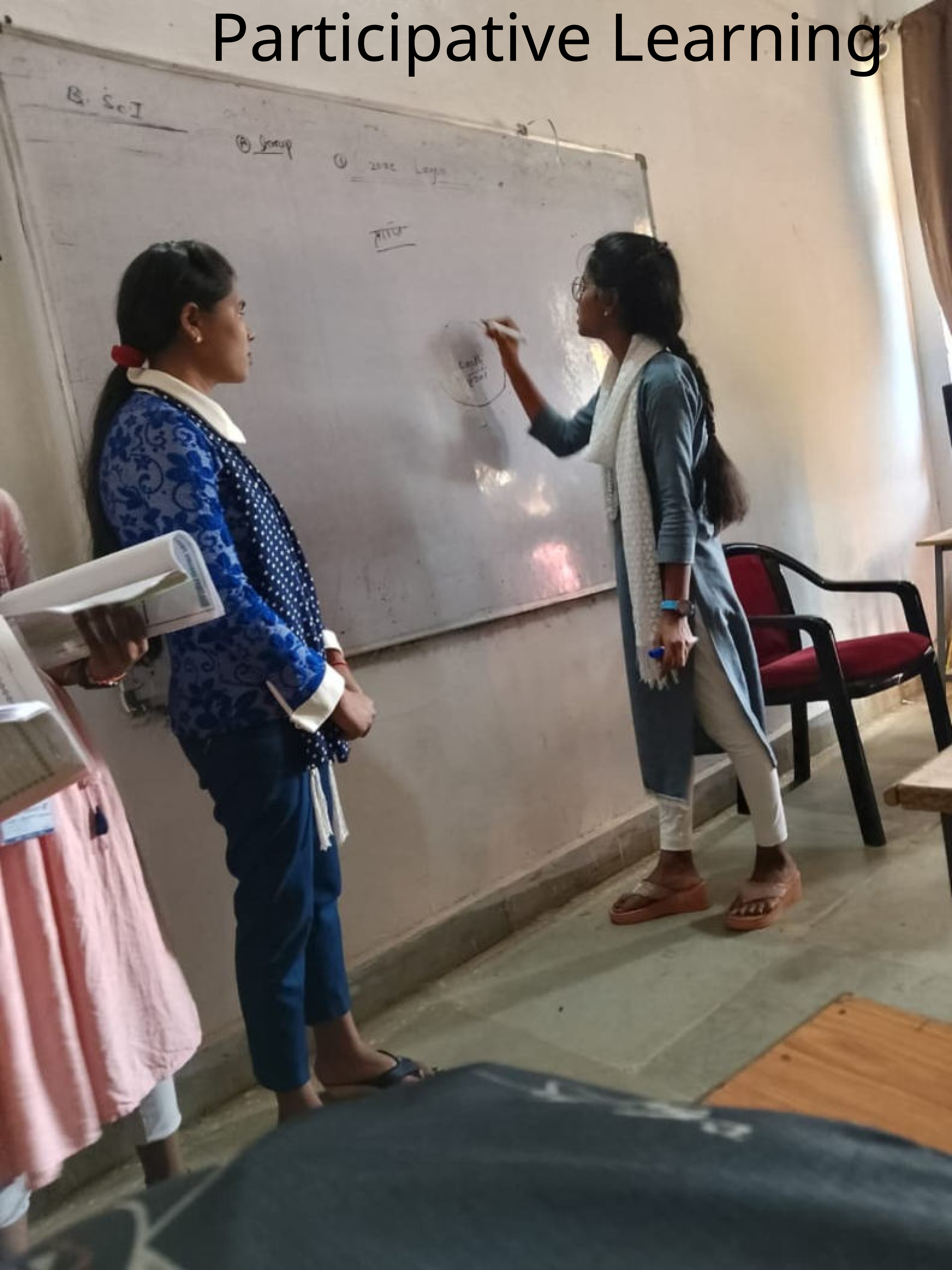

Seminar Presentation Using ICT

# GROUP DISCUSSION

# GROUP DISCUSSION

# MATHEMATICAL CHARTS PREPARATION

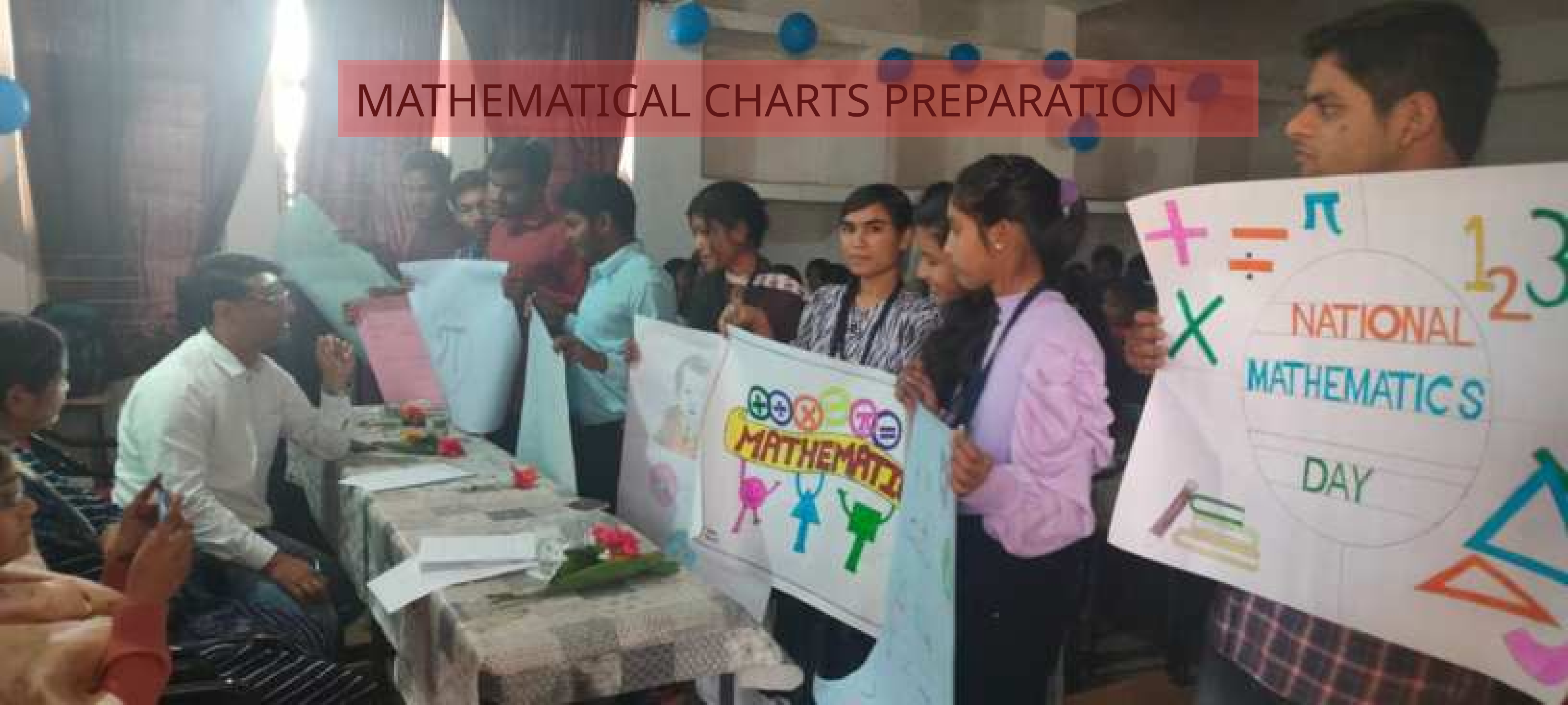

# EXPERIENTIAL LEARNING

EDUCATIONAL VISIT TO  BANK
Server Room

एच डी एफ सी बैंक
HDFC BANK
पामगढ़ शाखा
Pamgarh Branch
यहां गोल्ड लोन
उपलब्ध है

# EVS PROJECT

# EVS FIELD WORK

Navbodh
PAGE NO.
DATE / /

Name :- Kareema Kurrey

Father's Name - Mr. Vishal Kurrey

Class - B.A Part - III Year's

Sub. - Geography

Topic - Project work
(Mudpar(B))

Teacher's Name :- S. Uraon

Callage :- Dr. Bhimrao Ambedker
Govt. Callage Pamgarh

Janjgir-Champa Chhattisgarh

X X X

शिक्षक के हस्ताक्षर :

# भौगोलिक भ्रमण 2023 - 24

## [ मुड़पार - (ब) ]

**रूपरेखा :** —

(i) प्रस्तावना

(ii) भौगोलिक यात्रा

(iii) मुड़पार ब का परिचय

(iv) स्थिति एवं विस्तार

(v) मिट्टी एवं फसलें

(vi) पिकनिक स्पाट

(vii) भ्रमण हेतु स्थल

रहा है। इस ग्राम कि आबादी भी अधिक नही 1500 से 2000 तक न्यूनतम जनसंख्या के साथ यह ग्राम अपने आप में अद्भुत है।

(ii) भौगोलिक यात्रा :— प्रातः 10 बजे सभी छात्र एवं छात्राएँ उत्सुक्ता पूर्वक डॉ. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय के सामने एकत्र थी। सभी के चेहरे पर भ्रमण जाने कि लालसा प्रतित हो रही है।

शिक्षक के हस्ताक्षर :

सभी अपने जरूरी समानो के साथ तैयार खडे थे। सभी वाहन कि राह देख रहे थे।

तभी वाहन आया सभी अपने - अपने यथा स्थान वाहन में बैठे तत्पश्चात् 11:30 मिनट पर हम महा. विद्यालय से ग्राम मुड़पार (च) जाने हेतु रवाना हुए।

पामगढ़ से सिधे जाँजगीर रोड़ मार्ग पर हम आगे बढ़े आगे बड़ी सी नहर को पार कर पेट्रोल - पंप को पार किए फिर ग्राम कुहराबोड़ मे एंट्री किए जाए। जहाँ से हमे विद्यालय के सामने सुन्दर सी डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी कि मूर्ति देखने को मिल आगे 7-8 किलोमीटर कि यात्रा तय कर के फाइनल मे हम ग्राम मुड़पार पहुच गये

(iii) **मुड़पार ग्राम का परिचय :-** भारत के हृदय स्थल कहे जाने वाले हमारें छत्तीसगढ़ में वर्तमान में 33 जिले है। उन्ही मे से एक जाँजगीर - चाम्पा जिले के पामगढ़ → थाना एवं तहसील के अन्तर्गत ग्राम मुड़पार आता है।

पामगढ़ के पूर्व में स्थित ग्राम मुड़पार (ब) उत्तर में ग्राम सिल्ली दक्षिण में ग्राम मढ़रा पूर्व में ग्राम कुथूर एवं पश्चिम में ग्राम डूड़गा से घिरा हुआ है।

ग्राम पंचायत मुड़पार (ब) (उत्तर में) जॉजगीर - चाम्पा मुख्य मार्ग के किनारे या मुख्य मार्ग पर स्थित है। यह ग्राम अपने आप में अद्भुत है।

ग्राम मुड़पार को पुराने समय में मुड़पार बजरंग के नाम से सम्बोधित किया है जो समयानुसार परिवर्तित हो कर आज हमारे सामने मुड़पार 'ब' के नाम से अधान भी स्थित है।

(iv) स्थिति एवं विस्तार :- चूंकि ग्राम पंचायत मुड़पार 'ब' जॉजगीर चाम्पा जिले के अन्तर्गत आता है और मुड़पार कि स्थिति विस्तार जॉजगीर चाम्पा जिले का हि भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार लेंगे।

जॉजगीर चाम्पा छत्तीसगढ़ में 21.6 डिग्री उत्तर से 22.4 डिग्री उत्तरी अक्षांश पर स्थित है।

इसी नाले के किनारे शिवघाट नाम से प्रसिद्ध घाट भी है यहाँ एक मंदिर एवं पचरी निर्माण है। यहाँ पिकनिक हेतु एक अच्छा स्पाट है जिसका लुप्त गाँव वाले एवं आस-पास गाँव के लोग उठाते है।

(vii) भ्रमण हेतु स्थल :—

जैसा कि हमने पूर्व में ही वर्णन किया है कि यहाँ कितना सुन्दर पिकनिक स्पाट अवस्थित है तो आप इस बात कि कल्पना कर सकते है कि यहाँ भ्रमण हेतु कई अच्छी अच्छी जगहें होगी।

शिवघाट → शिवघाट भ्रमण हेतु एक अच्छा स्थान है जो ग्राम स्थिति नाला के किनारे बना हुआ है।

उद्यान :— यहा एक सुन्दर सा नर्सरी उद्यान भी है जहाँ कई किस्मों के फूल, फल, वृक्ष, फलदार सभी प्रकार के पौधों का पैकेजिंग किया जाता है।



जो अन्य नर्सरी वालों मे भेजा जाता है इस उद्यान मे भ्रमण हेतु यदि पर मनमोहक फूलों को देखकर ऐसा लगता है मानो वो हमे अपनी ओर बुला रही हो।

उद्यान में बड़े-बड़े नारियल वृक्ष एवं नाना प्रकार के वृक्ष है। उद्यान मे 24 घंटे सुरक्षा व्यवस्था बनी रहती है।

शिक्षक के हस्ताक्षर :

एम.ए. प्रीवियस - 2023-24, 14/5/24

| क्र० | नाम छात्र/छात्रा | पिता का नाम | सेमीनार टॉपिक और प्रोजेक्ट वर्क कार्ड का | | ग्रेड | हस्ताक्षर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 01 | कु० अलका | | W.T.O. विश्व व्यापार संगठन | 04 | B | अलका पटेल |
| 02 | पंकज कुमार | | वर्तमान विश्व के देश | 04 | A | पंकज कुमार |
| 3 | नागेश्वर साहू | | भारतीय राजनीतिक का विकास | 04 | A | |
| 4 | डी.पी. लहरावा | रथराम | अन्तर्राष्ट्रीय संगठन सार्क | 04 | B | |
| 05 | उत्तम पटेल | | कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत | 04 | A | |
| 06 | गीता कश्यप | | नि:शस्त्रीकरण की आवश्यकता | 04 | C | |
| 07 | पुष्पा पटेल | | राजा राममोहन राय के सुधार | 04 | C | |
| 08 | दुर्गा गोंड | | शोध प्रविधि सामाजिक शोध | 04 | C | |
| 09 | चंद्रहास | | डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक सुधार | 04 | C | |
| 10 | प्रीति साहू | | अन्तर्राष्ट्रीय संगठन OPEC | 04 | B | |
| 11 | किशोरदास | | अन्तर्राष्ट्रीय संधि CTBT | 04 | B | |
| 12 | पूर्णिमा जांगड़े | | महात्मा गांधी का आन्दोलन | 04 | C | पूर्णिमा |
| 13 | शारदा जांगड़े | | आचार्य मनु के सिद्धांत | 04 | C | शारदा |
| 14 | सोमेश्वरी अहिवार | | मानवाधिकार की सार्थकता | 04 | A | |
| 15 | जय कुमारी धीवर | | जयप्रकाश नारायण के सामाजिक विचार | 04 | A | |
| 16 | सुनीता जांगड़े | | राम मनोहर लोहिया प्रमुख उपलब्धियां | 04 | C | Sunita |
| 16 | ईश्वर जांगड़े | | शराबबंदी की योजना | 04 | C | |
| 17 | मनीषा बंजारे | | तथ्य संकलन की आवश्यकता | 04 | B | Manisha |
| 18 | ममता कुर्रे | | सामाजिक विचार ~~सामाजिक विचार~~ | 04 | C | |
| 19 | सतरूपा यादव | | डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक विचार | 04 | A | Satrupa yadav |
| 20 | प्रकाश सिंह | | डॉ. अम्बेडकर का दलित उद्धार | 04 | B | |
| 21 | अरविंद | | डॉ. राममनोहर लोहिया के विचार | 04 | C | अरविंद |
| 22 | चन्द्रप्रकाश राज | | प्रश्नावली के प्रकार | 04 | B | |
| 23 | दिनेश | | शीत युद्ध के कारण | 04 | C | दिनेश |
| 24 | शैलेश कुमार | | तनाव शैथिल्य का प्रभाव | 04 | C-F | |
| 25 | सतीश कुमार | | वैश्वीकरण की आवश्यकता | 04 | C | |
| 26 | कु० करीना कुर्रे | | राजा राममोहन राय जीवन परिचय | 04 | C | |

14/5/24

एम.ए. पू० (प्रथम) S(सेमेस्टर) 15/5/2024 Seminar पा (छ.ग.)

| क्र० | छात्र/छात्रा का नाम | पिता/पति | सेमीनार का टॉपिक | फाइल | ग्रेड | हस्ताक्षर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 01 | बोट बाई | पुनीराम | मानव अधिकार का उद्देश्य | 04 | C | [illegible] |
| 02 | रति पटेल | | पंचायती राज अधिनियम | 04 | A | [signature] |
| 03 | कु. रेवती पटेल | | मूल अधिकार और मानव अधिकार में अंतर | 04 | A | [signature] |
| 04 | उमरती पटेल | रघुनंदन | स्थानीय स्वशासन व पद व्याख्यान | 04 | C | अमरती पटेल |
| 05 | कविता यादव | लक्ष्मण यादव | राजनय की विशेषताएँ | 04 | C | [signature] |
| 06 | दुर्गेश कुमार | रामचरण | स्थानीय स्वशासन के कार्य | 04 | C | [signature] |
| 07 | शुभम साहू | | जनपद पंचायत की संरचना | 04 | C | [signature] |
| 08 | मनीषा लहरे | | नगरीय स्थानीय स्वशासन | 04 | C | मनीषा लहरे |
| 09 | गनेश्वरी पटेल | | राष्ट्रीय मानव अधिकार संगठन | 04 | C | [signature] |
| 10 | योगिता राजे | | ग्राम पंचायत का गठन | 04 | C | [signature] |
| 11 | रजनी साहू | | उत्तम पुरुष के गुण | 04 | C | रजनी साहू |
| 12 | चेतना पुरी | | राज्य में वित्तीय प्रशासन | 04 | C | [signature] |
| 13 | अखिलेश कुमार | | सूचना का अधिकार | 04 | A | [signature] |
| 14 | लीलाराम टंडन | | मानव अधिकार संरक्षण | 04 | C | [signature] |
| 15 | मनीषा पटेल | शिवकुमार | राज्य की कार्यपालिका | 04 | C | [signature] |
| 16 | प्रमोद कुमार साहू | | | 04 | C | प्रमोद |
| 17 | परमानंद तिवारी | | | 04 | C | [signature] |
| 18 | शिव कुमार | आत्माराम | | | C | शिवकुमार |
| 19 | सुरेन्द्र कुमार | मोतीलाल | | | | सुरेन्द्र कुमार |

[signature]
Dr. S.R. [illegible]

[signature]

DR. BHIMRAO AMBEDKAR GOVT. COLLEGE, PAMGARH
DEPARTMENT OF ENGLISH
TOPIC DISTRIBUTION FOR SEMINAR (2023-24)
MA ENGLISH (SEMESTER-II) II nd sem.

| SN | NAME | TOPIC | SIGNATURE |
|---|---|---|---|
| 1 | AARADHANA | A. G. Gardiner | Aaradhana |
| 2 | ANJANA SINGH BANJARE | Absent | (A) |
| 3 | ANJANI | Absent | (A) |
| 4 | IJEK | The happy prince | Ijek |
| 5 | MUSKAN BANJARE | The selfish gaint | [illegible] |
| 6 | PAWAN KUMAR | Robert Lynd. biogoraphy | [illegible] |
| 7 | PRAVEEN K CHAUDHARI | Contribution of T.S. Eliot | [illegible] |
| 8 | SHALINI | A Dolls House | शालिनी |
| 9 | SUNITA DAHARIYA | Absent | (A) |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

Dr. S.K. Tripathi

**Dr. Bhimrao ambedkar Govt. College, Pamgarh, janjgir-Champa (C.G.)**

**Dept. of English**

## Third Semester

| Attendance Sheet: Seminar: 2023-24 | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **SN** | **Name** | **Father's Name** | **Submission** | **Presentation** | **Signature** | **Marks** |
| 1 | AAKASH NARANGE | TILAKSAY | ✓ | ✓ | Asky. | |
| 2 | AJAY KUMAR BANJARE | BABULAL BANJARE | ✓ | ✓ | Ajay Banjare | |
| 3 | ALPANA | OSRAM | ✓ | ✓ | Alpana | |
| 4 | ANURADHA | BAHARATA | ✓ | ✓ | Anuradha | |
| 5 | CHANDNI ANCHAL | DILEEP KUMAR ANCHAL | ✓ | ✓ | Chandni | |
| 6 | CHANDRAKIRAN JANGADE | MANSAY JANGADE | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 7 | DEEP KAMAL BANJARE | DAYALU RAM BANJARE | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 8 | DHANANJAY | PURUSHOTTAM | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 9 | GULSHAN KUMAR | BHOLA RAM | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 10 | HARISH KUMAR TODE | ASHOK KUMAR | ✓ | ✓ | Harish | |
| 11 | KHUSHBU MADHUKAR | GORE LAL | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 12 | LATA BHARTI | JAGRAM | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 13 | MAHESH KUMAR | SHIV KUMAR | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 14 | MANISHA SAHU | SANTOSH SAHU | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 15 | MONIKA LAHRE | DHARAM LAL LAHRE | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 16 | NAMITA KUMARI | PARDESHI LAL | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 17 | NAVDHA PRASAD | PANCH RAM | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 18 | PRIYA KHARE | PANCHRAM KHARE | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 19 | RANJNA | DHARAM LAL | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 20 | SHIV PRAKASH | SUNHAR | ✓ | ✓ | [illegible] | |
| 21 | VARSHA KHANDEY | SAMARU KHANDEY | ✓ | ✓ | Varsha | |

Page No.

Roll No.

Date

Name - Aaradhana

Class - M.A. English Second Sem.

Subject - prose (paper - III

College - Bhim Rav Ambedkar Govt. College (pangarh)

Genius

# A G Gardiner Essaist

## A. G. Gardiner (1865-1946)

Introduction- Alfred George Gardiner was barn On 2nd june 1865 in Chalmsfard. He was an English journalist. editar and authar. His essays. written under the alias Alpha of the plough are highly regarded.

As a boy he warked at the Chelmsfard Chronicle and the Bournemouth Directory. He jained the Northern Daily telegraph in 1887. In 1899. he was appointed editar of the Blackburn weekly telegraph Later, he jained as the editar of the Daily News in 1902 and warked till 1919.

He started contributing to the star under the pseudonym Alpha of the plough from 1915 His essays are unifarmly elegant graceful and humarous. His uniqueness lay in his ability to teach the basic truths of life in an easy and amusing manner. the coll ections- pillars of society pebbles on the shore many furrows and leaves in the wind are some of his best known writing. He died on 3th March 1946.

Alfred George Gardiner is known as the prominent prolific delightful and popular modern essayist.

His literary career extends from the victorian age to the modern age His cheerful and optimistic deliverance makes him a significant writer of his age. His essays are not complicated or tricky. He writes on trivial matters which everyone faces in day life with less importance. He looks at the oddities of life with diversified perspectives and beautifies them with the added flavour of humorous sense and presents them with a unique style of simplicity. He laughs at the follies of people and satirizes his own defects. He has established himself as a humourist by mocking at the less noticed but yet to be corrected mistakes of men without hurting their feelings.

As an Essayist: Gardiner's essays under the pen name Alpha of the plough are incredible and noteworthy. As an essayist he assumed the role of a preacher and a moralist to the core. He wrote for uplifting the manners and morals of the war-ridden English Society. The essayist speaks on the morality of life and human interest that plays a vital role in defining one character.

## On The Rule of Road An

On The Rule of the Roed (By AG Gardiner (2 june 1865-
3 march 1946)

## Summary and Analysis

Alfred Georg (A.G) was a British journalist and author. He was a prolific essayist and his style and Subject matter aily qualified him to be categorized as what the English would call a very civilized gentleman. His essays addressing the necessary qualifications to fit into proper society are 'On Habits' On Being tidy' On talk and talkers' 'On saying please and 'On the Rule of the Road' this latter essay was included in one of Gardiner.s compilations titled Leaves in the wind and was published under his pseudonym 'Alpha of the plough'. Consistent with the theme of what Constitutes the proper conduct of a civilized individual On the Rule of the Road remains one of his more enduring essays because it Captures a very essential point that the essence of civilization lies in the willingness of the individual to accept Constraints on his or her personal behavior for the benefit of the greater good.

Introduction - In a witty piece of writing A.G. Gardiner brings out the essential

Difference between individual and social liberty and the need for adjustment between the two. He illustrates how unlimited freedom will Only lead to disorder.

Theme: the idea of personal liberty: as a social Contract by

Gardiner reflects the idea of Social Contract by the philosopher john Locke. Locker is one of the thinkers closest to the social contract idea. this idea says. we are giving up some of our Smaller freedoms so we can live in a society together In return for doing so. our major point in this essay Literally when Gardiner refers to the road rule. he is talking about the rules that tell you want can do on the road. He uses traffic laws as a metaphor for the rules that make society work.

The main point of view of the essay:

is the people need to Consider how their actions affect other not just what they want to do themselves and how they affect Society.

Laws need to be Observed: and followed in Spirit rather than letter. However some laws should be and can be winked at when the need arises. Laws are Cantegarized as ones to be observed and follow at all Costs.

# On Runing After One's Hat - Summary

On Running After One Hat is one of the most interesting essays written by G.K. Chesterton. In the essay we have the theme of escape embarrassment and acceptance. taken from his on On Running After One.s Hat and other Whimsies callection the reader realises after reading the essay that chesterton may be exploring the theme of escape. for chesterton it is easier to imagine himself acting as a child might do when it comes to matters of inconvenience.

He believes that a person will be happier should they change their Outlook or view life through the lens of a child when encountering inconvenience. Not only will an individual remain calm but they will treat each inconvenience as an adventure. just as a child might chesterton using the young boy at the train station as an example. the boy does not frown upon the fact that train is late. Rather he sees everything at the station as being wonderfully exciting though chesterton may have a point it might be important to remember that many people will encounter difficulty looking at life through the lens of a child.

Embarrassment will overtake them and they will feel isolated from the world. As many people who have chased their hats might feel it is this embarrassment that an individual feels which will stop an individual chasing their hat as they know that those onlookers who notice what is happening are laughing at the individual rather than with them.

Something that Chesterton does not mention in the essay. For Chesterton life is simply better when society drops its guard not allows for the individual to be themselves without being overtly criticized by society However. the reality in life is very much different society likes to laugh at the mishaps that occur in an individual.s life It helps society to deflect away from its own problems or worries. It is easier to laugh at another person than to reflect on one.s own misfortunes. something that will not change regardless of chestertons assertion that is good to laugh at a man chasing a hat. One point in whereby Chesterton might be right is on the matter of men chasing afte woman.

# डॉ. भीमराव अम्बेडकर शास. महाविद्यालय पामगढ़

DIST - JANJGIR CHAMPA (C.G.)

SESSION - 2023-24

# ASSIGNMENT

( DEPARTMENT OF M.A. POLICAL SCIENCE )

( SECOND SEMESTER )

PAPER FORTH

अंतर राष्ट्रीय संगठन

Assignment Topic

ON

संयुक्त राष्ट्र सेब क्या है इसको अर्थ उद्देश्य एवं भारत में इनकी क्या भूमिका है

Submited by :

Guidance By :

Name - Alka Sande

Dr. Rs. Mahendra Sir.

Department of M.A. Pol.sci.-II- Sem.

Roll No. Date

# ☆ अंतर्राष्ट्रीय संगठन ☆

## ☆ अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की परिभाषाएँ ⇒

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन स्वतन्त्र तथा प्रभुसत्ता - सम्पन्न राज्यों की एक ऐसी संस्था है जिसकी स्थापना कुछ निश्चित लक्ष्यों - अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की स्थापना तथा सहयोग की प्राप्ति हेतु की जाती है। रूप और उद्देश्य की दृष्टि से असमान होते हुये भी प्रायः सभी संगठनों का निर्माण इसी कारण से होता है कि समस्त मानव - जाति को एक होना चाहिये। ऐसे संगठनों का निर्माण करते समय राज्य अपनी प्रभुसत्ता का परित्याग नहीं करते हैं, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय संगठन राष्ट्रोपरि नहीं होते।

### (1) चीवर तथा हैवीलैण्ड ⇒

चीवर तथा हैवीलैण्ड के मतानुसार, "अन्तराष्ट्रीय संगठन ...... राज्यों के बीच एक सहकारी व्यवस्था के रूप में परिभाषित की जा सकती है जिसकी स्थापना सामान्यत एक आधारभूत समझौते द्वारा, आपस में कुछ लाभदायक कार्यों को नियतकालिक बैठकों तथा स्थायी कर्मचारी - वृन्द के द्वारा सम्पन्न करने के लिये होती है।

Date

Roll No.

(२) प्रो. पी. वी. पॉतर ⇒ प्रो. पी. वी. पॉतर के अनुसार, अन्तराष्ट्रीय संगठन के छः विशेष रूप हैं ⇒ (1) राजनय (२) संधिवार्ता, (3) अन्तर्राष्ट्रीय विधि (4) सम्मेलन, (5) प्रशासन और न्यायनिर्णय तथा (6) अन्तराष्ट्रीय संघ। यह वर्गीकरण, पामर व परकिन्स के अनुसार, वास्तव में अन्तराष्ट्रीय संगठनों की विशिष्टताओं से सम्बन्धित होने की अपेक्षा, अन्तराष्ट्रीय परस्पर व्यवहार की क्रियाविधियों से अधिक सम्बन्धित है।

प्र (1) ⇒ संयुक्त राष्ट्र संघ क्या है इसके उद्देश्यों एवं कार्यों का वर्णन कीजिये? एवं भारत में इसकी क्या भूमिका है लिखिये?

उत्तर ⇒

संयुक्त राष्ट्र संघ का उदय ⇒ वर्साय की संधि (Treaty of versailles) के प्रथम भाग के रूप में राष्ट्र संघ प्रसंविदा (the league covenant) पर 28 जून 1919 को हस्ताक्षर हुए तथा यह 10 जनवरी 1920 ई. को प्रभाव में आया। राष्ट्र-संघ की स्थापना का श्रेय केवल किसी एक व्यक्ति को नहीं दे सकते।

Roll No. Date

तथापि इसे मूर्तरूप देने में अन्य किसी भी राजनेता की अपेक्षा संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति वुडरो विल्सन का योगदान अधिक था। राष्ट्रपति विल्सन द्वारा घोषित 14 सूत्री - कार्यक्रम के अन्तिम सूत्र में युद्ध को रोकने तथा शान्ति - व्यवस्था कायम रखने के लिये एक स्थायी अन्तर्राष्ट्रीय संगठन (राष्ट्र - संघ) बनाने का प्रस्ताव रखा गया था। उस सूत्र में वर्णित था कि, "छोटे और बड़े दोनों ही प्रकार के राष्ट्रों को राजनीतिक स्वतन्त्रता और प्रादेशिक अखण्डता की पारस्परिक गारण्टियाँ समान रूप से प्राप्त हो सकें। इस प्रयोजन की पूर्ति के लिये कुछ विशिष्ट प्रसंविदाओं के अधीन राष्ट्रों के सामान्य संगठन का निर्माण होना चाहिये। (8 जनवरी 1918 ई. कांग्रेस में राष्ट्रपति विल्सन द्वारा दिये गये अभिभाषण से उद्धरण)।

18 जनवरी, 1919 ई को पेरिस शान्ति सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित कर यह संकल्प लिया गया कि, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का विकास करने, मान्य अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों की संसिद्धि को सुनिश्चित करने तथा युद्ध के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करने के लिये एक राष्ट्र - संघ की स्थापना होनी चाहिये।

इस बात को भी निश्चित किया गया कि राष्ट्र - संघ के सदस्यों को समय - समय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एकत्र होना

Date

Roll No.

चाहिये तथा (उसका) एक स्थायी संगठन एवं सचिवालय होना चाहिये ।

राष्ट्र-संघ का प्रारम्भ ही अनुचित रीति के से हुआ क्योंकि यूरोपीय राष्ट्रों का समर्थन प्राप्त करने के लिए राष्ट्रपति विल्सन को विवशतापूर्वक राष्ट्र-संघ प्रसंविदा को 1919-1920 ई. की उन शान्ति-सन्धियों से जोड़ना पड़ा। जिनमें अनेक अव्यावहारिक और अन्यायपूर्ण शर्तें जुड़ी हुई थी जोकि प्रथम विश्व-युद्ध के पश्चात् उत्पन्न होने वाली अनेक कठिनाइयों का मुख्य कारण थीं । वुडरो विल्सन को यह डर था कि यदि राष्ट्र-संघ प्रसंविदा को शान्ति-सन्धियों से पृथक् करके रखा गया तो उसे सरकारों का अनुसमर्थन प्राप्त नहीं हो पाएगा ।

यद्यपि राष्ट्र-संघ 'वुडरो विल्सन के मस्तिष्क की उपज (Brain-child of woodrow willson) था, तथापि अमेरिकी सीनेट द्वारा वर्साय की सन्धि का अनुसमर्थन न करने के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका को इसकी सदस्यता प्राप्त नहीं हुई । अमेरिकी सीनेट की यह सोच थी कि राष्ट्र-संघ की सदस्यता ग्रहण करने के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका को विवशतापूर्ण उन अन्तर्राष्ट्रीय विवादों में उलझना पड़ेगा

Roll No.

Date

जिनका अमेरिकी महाद्वीप की राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं होगा।

प्रस्तावना :—

लीग प्रसंविदा वर्तमान संयुक्त राष्ट्र चार्टर से अत्यन्त छोटा था जिसमें एक प्रस्तावना तथा 26 अनुच्छेद (Article) थे।
प्रसंविदा की प्रस्तावना में स्पष्ट था कि -
"इस संघ में शामिल होने वाले राष्ट्र,

(1) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का विकास करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की सिद्धि के उद्देश्य से,

(2) युद्ध का मार्ग न अपनाने का दायित्व स्वीकार करके,

(3) राष्ट्रों के मध्य मुक्त न्यायपूर्ण तथा सम्मानपूर्ण सम्बन्धों को स्थापित करके,

(4) सरकारों के मध्य आपसी व्यवहार के निमित्त अन्तर्राष्ट्रीय विधि को वास्तविक रूप में कार्य करने वाला समझने की दृढ़ धारणा से,

Date

Roll No.

(6) परिषद के अस्थायी सदस्यों के निर्वाचन, कार्यकाल नए तथा पुनर्निर्वाचन से सम्बन्धित नियमों के निर्धारण करना।

(7) संविदा में संशोधन हेतु प्रारम्भिक कदम उठाना (Covenant amendment)।

(8) अपनी क्रियाविधि नियमों को सुनिश्चित करना तथा अपनी समितियों की नियुक्ति करना।

(9) राष्ट्र - संघ के खर्च को सदस्यों - राज्यों के मध्य विभाजन करना।

(10) अनुच्छेद 15 के अन्तर्गत, परिषद से अपने पास भेजे गये विवाद (यदि विवाद से सम्बन्धित कोई भी पक्ष अनुरोध करे) का फैसला करना।

(11) अनुच्छेद 6 के अन्तर्गत, महासचिव की नियुक्ति परिषद द्वारा होती थी तथा उसकी नियुक्ति का अनुमोदन सभा करती थी।

Roll No.

Date

(12) अनुच्छेद 14 के अन्तर्गत, सभा किसी भी विवाद अथवा प्रश्न पर स्थायी अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय से सलाह या विचार - विमर्श हेतु मत माँग सकती थी और अन्त में,

(13) लीग प्रसंविदा (League contract) के अनुच्छेद 19 के अन्तर्गत समय समय पर सभा राष्ट्र - संघ के सदस्यों - राज्यों को जिन अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के जारी रहने से विश्व - शान्ति को खतरा होता था उन पर विचार करने तथा ऐसी संधियों पर पुनर्विचार करने की सलाह दे सकती थी जो अब लागू होने योग्य न रह गयी हों।

राष्ट्र - संघ का कोई भी सदस्य - राज्य सभा या परिषद का ध्यान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों को प्रभावित करने वाली

Date

Roll No.

ऐसी किसी भी परिस्थिति की ओर आकर्षित करता था जिससे अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति या सद्भावना पर विक्षेप पड़ने की आशंका हो।

वस्तुतः वैश्विक समस्याओं पर विचार करने तथा अपना मत प्रकट करने के लिये सभा के पास नियमित फोरम (forum) थी तथा विशेषकर छोटे राज्यों के लिये यह बहुत ही उपयोगी थी।

अन्तर्राष्ट्रीय शिकायतों और झगड़ों पर विचार - विमर्श तथा सुलह समझौता करने के लिये सभा एक अच्छे मंच का कार्य करती थी। इस सभा ने राष्ट्र - संघ को एक ऐसा स्थान बना दिया जहाँ वे राजनीतिज्ञ भी अपने विचार व्यक्त कर सकते थे जिन्हें परिषद में स्थान प्राप्त नहीं था।

Roll No.

Date

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिये राष्ट्र - संघ की परिषद के साथ - साथ सभा भी प्रसंविदा की एक उपयोगी देन थी। इससे पहले यूरोप के विभिन्न राजनीतिज्ञ किसी समान लक्ष्य की प्राप्ति हेतु नियमित रुप से किसी मान्य स्थान पर एक साथ एकत्रित नहीं हुये थे।

...त में इसकी भूमिका :-

अंतर्राष्ट्रीय शान्ति व सुरक्षा को बनाये रखना संयुक्त राष्ट्र की कार्य प्रणाली का एक मौलिक सिद्धांत है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान, शान्ति - स्थापना कार्य और विवाद प्रस्तावों की स्थापना का प्रयास करती है।

सर्वाधिक मूलभूत सिद्धांत सामूहिक सुरक्षा का है जिसे किसी आक्रमणकारी के विरुद्ध संयुक्त कार्यवाही

Date

Roll No.

के उद्देश्य से गठित एक विशाल सम्बन्ध के निर्माण के विचार से जोड़ा जाता है। यह सभी राज्यों की प्रभुत्वपूर्ण समानता और सभी आक्रामकताओं के विरुद्ध उनके स्वैच्छिक रूप से एकजुट होने की मान्यता पर आधारित है। अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाये रखने के लिये सामूहिक सुरक्षा की धारणा को एक मात्र व्यवहारिक व्यवस्था है।

संयुक्त राष्ट्र चार्टर (U.N. charter) के अन्तर्गत सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था का दायित्व सुरक्षा परिषद पर होता है जिसे अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को किसी प्रकार से खतरा होने के संदर्भ में बाध्यकारी निर्णय लेने का अधिकार है।

अंतर्राष्ट्रीय विवादों के समाधान के संदर्भ में चार्टर का अध्याय (chapter) 6 सर्वप्रथम आक्रमणकारी के विरुद्ध बिना बल प्रयोग के विवाद पर विचार करता है।

Roll No.

Date

यद्यपि यदि अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा की स्थापना में शांतिपूर्ण माध्यम असफल हो जाएँ तो बल के प्रयोग का भी प्रावधान है। चार्टर में वर्णित बल प्रयोग में संबंधित सैद्धान्तिक प्रावधानों के बावजूद ये महाशक्तियों की रणनीतियों का शिकार बने हैं और लगभग निरर्थक हो रहे हैं।

बड़ी शक्तियों द्वारा वीटो के दुरुपयोग से संयुक्त राष्ट्र बड़ी शक्तियों द्वारा समर्थित किसी भी आक्रामकता को रोकने में असफल रहा। शीत युद्ध के दौरान केवल कोरिया संकट ही वह अवसर था जब संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने बल प्रयोग के उपायों का प्रयोग किया।

यह वह अवसर था जब भूतपूर्व सोवियत संघ ताईवान की जगह साम्यवादी चीन के प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर सुरक्षा परिषद का बहिष्कार कर रहा था।

उत्तर शीत युद्ध में इस काल में एक इसी प्रकार मामला था। सन् 1990 में कुवैत पर हुआ इसका हमला उस समय भी सुरक्षा परिषद के सदस्यों ने बल प्रयोग के पक्ष में वोट दिया था। अमेरिका वर्चस्व के दौर में ईरान - इराक के मामले में पाँच बड़ी शक्तियों के हितों में एकीभवन समाप्त होने लगा था। इसके पश्चात् सामूहिक सुरक्षा के सिद्धान्त की अवमानना का आधार बनने लगा।

चार्टर के अध्याय 7 में उल्लेखित बलपूर्वक सैनिक कार्यवाही का प्रावधान अंतिम पद्धति है। सैनिक कार्यवाही के अनिष्ट प्रभावों को जानते हुये अंतर्राष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए चार्टर के अध्याय 6 में विस्तृत प्रावधान प्रस्तावित किये गये हैं। अंतर्राष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान की पद्धतियों की विस्तृत रुपरेखा निर्धारित करते हुये चार्टर के अनुच्छेद 33 में स्पष्ट किया गया है कि किसी भी विवाद से संबंधित पक्ष विवाद के समाधान के लिये सर्वप्रथम संधि - वार्ता, जाँच, मध्यस्थता, संराधन या मेल - मिलाप

Roll No. Date

विवाचन, न्यायिक समझौते, प्रादेशिक एजेंसियों या अपने चयन के अन्य शांतिपूर्ण साधनों का प्रयोग करेंगे।

इस संबंध में प्राथमिक दायित्व सुरक्षा परिषद का है जिसे अंतर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को क्षति पहुँचाने वाले किसी भी विवाद या स्थिति की जाँच पड़ताल तथा विवाद के समाधान के लिये उपयुक्त पद्धतियाँ प्रस्तावित करने का अधिकार दिया गया है।

यह महत्वपूर्ण है कि अध्याय 6 में निर्दिष्ट प्रावधानों के अंतर्गत सुरक्षा परिषद के ये प्रस्ताव विवाद से संबंधित पक्षों के लिये केवल सलाहकारी है, बाध्यकारी नहीं है। फिर भी शीत युद्ध के भयानक चक्र में सुरक्षा परिषद ने संगठन के अधिकांश समय में विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के संदर्भ में सफलताओं एवं असफलताओं का मिश्रित रिकार्ड करवाया है।

विवादों के समाधान के लिये सामूहिक सुरक्षा से संबंधित बलपूर्वक सैनिक कार्यवाही या